प्रातःक्लास 3/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। डबल ओमशान्ति कहें तो भी राइट है। बच्चों को अर्थ तो समझा दिया है। मैं हूँ आत्मा और शांत स्वरूप। जब मेरा धर्म है ही शांत स्वरूप तो फिर जंगलों में आदि में भटकने से शांति नहीं मिल सकती है। बाप कहते हैं मैं भी शांत स्वरूप हूँ। यह तो बहुत ही (स)हज है। हरेक बात बहुत सहज है; परन्तु माया के लड़ाई होने कारण थोड़ी डिफीकल्ट होती है। यह भी बच्चे जातने हैं, सिवाय बेहद के बाप के यह ज्ञान कोई दे न सके। ज्ञान सागर एक ही बाप है। देहधारी को कब ज्ञान सागर नहीं कहा जा सकता। रचयिता ही रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देते हैं। वह तुम बच्चों को मिल रहा है। कई अच्छे–2 अनन्य बच्चे भी भूल जाते हैं; क्योंकि पारे मिसल है बाप की याद। स्कूल में तो ज़रूर नम्बरवन होंगे ना। नम्बर हमेशा स्कूल के गिने जाते हैं। सतसंग में कब नंबर नहीं गिना जाता। यह स्कूल है, इसको समझने में भी बुद्धि चाहिए। आधा कल्प होती है भक्ति। फिर भक्ति के बाद ज्ञान सागर आते हैं। ज्ञान देते हैं। भक्ति मार्ग वाले कब ज्ञान दे न सके; क्योंकि सभी देहधारी है ना। ऐसे थोड़े ही कहेंगे शिव बाबा भक्ति करते हैं। वह किसकी भक्ति करेंगे? एक ही बाप है जिसको देह नहीं है। वह किसकी भक्ति नहीं करते। बाकी जो भी देहधारी हैं वह भक्ति करेंगे; क्योंकि रचना है ना। रचयिता है एक बाप। बाकी इन आँखों से जो कुछ देखा जाता है चित्र आदि वह सभी हैं रचना। यह सभी बातें घड़ी–2 भूल जाते हैं। बाप समझते रहते हैं तुमको बेहद का वर्सा बाप बिगर तो मिल न सके। वैकुण्ठ की बादशाही तुमको मिलती है। इनकी राजाई भारत में थी। 5000 वर्ष पहले इन्हों की राजधानी (चली) 2500 वर्ष सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी की राजाई चली। तुम बच्चे जानते हो यह तो कल की बात है। सिवाय बाप के और कोई बता न सके। पतित–पावन भी वह बाप ही है। समझाने में भी बड़ी मेहनत लगती है। बाप खुद कहते हैं, कोटों में कौऊ ही समझेंगे। यह चक्र भी तो समझाया गया है। तुम गवर्नर आदि के, बड़ों–2 के बंगले तक जाकर समझाते हो, चित्र आदि दिखाते हो। छिपा कर थोड़े ही रखा है। यह तो सारी दुनियां के लिए नॉलेज है। कोई–2 अहंकारी मनुष्य कहते हैं यह तुम क्यों लिखा है। अरे! यह तो सभी बड़े–2 आदमी देखते हैं सभी इस नॉलेज को अच्छा समझते हैं। अच्छा मानते हैं। सीढ़ी भी बिल्कुल कायदे सिरे है। फिर गुरुर–गुरुर करते रहते हैं। बाबा ने समझाया था शादी के लिए जो हॉल बनाते हैं उन्हों को समझाकर दृष्टि दो। आगे चलकर सभी को बाबा की बातें पसन्द आवेंगी। समझाना तो बच्चों को है। बाकी किसको बाबा के पास ले आना बेबी पना है। बाबा तो कोई से मिलते ही नहीं; परन्तु बच्चे उनको कह देते हैं चलो बाबा के पास तुमको ले ..... बाबा समझावेंगे। बाबा तो समझते हैं जंगल से एप्स को ले आते हैं। उनको हम क्या समझावेंगे। शिव भगवानुवाच, बच्चे तुमको पता है, इस जनावरों के जंगल में सबसे बड़ा जनावर बेसमझ कौन है? शंकराचार्य। साफ बताते हैं ना। बाबा ने समझाया था जो पुजारी है उसको पूज्य नहीं कहा जा सकता। खुद ही शिवबा(बा) पुजारी है। उनको पूज्य कैसे कहा जा सकता। फिर उनके कितने फॉलोवर्स होते हैं। चाकरी करते हैं। पतित की बैठ पूजा करते हैं। बाबा ने कहा भी था तुम लिख सकते हो, पुजारी को पूज्य कह नहीं सकते। अपना घमण्ड कितना है कि हम पूज्य हैं। कलयुग में एक भी पूज्य हो न सके। इम्पॉसिबुल है। पूज्य की स्थापना ही ऊँच ते ऊँच, जो पूज्य हैं वही करते हैं। आधा कल्प है पूज्य फिर आधा कल्प पुजारी ही पुजारी होते हैं। इस बाबा ने भी ढेर गुरू किया। अभी समझते हैं गुरु करना तो भक्ति मार्ग था। अभी सदगुरु मिला है जो सभी को पूज्य बनाते हैं। सिर्फ़ एक को नहीं, सभी को बनाते हैं। आत्माएं सभी की सतोप्रधान पूज्य बन जाती हैं। अभी तो तमोप्रधान पुजारी है। यह बहुत प्वाइन्ट्स समझने की है। बाप कहते हैं सतयुग में कब भी कोई पुजारी हो न सके। कलयुग में एक भी पूज्य हो न सके। सन्यासियों के लिए भी समझाया है वह कोई पवित्र थोड़े ही हैं। विख से पैदा हो पुनर्जन्म लेते रहते हैं; परन्तु वह हैं पूज्य; क्योंकि वहां रावण राज्य है नहीं। रामराज्य रावण राज्य अक्षर कहते हैं; परन्तु राजराज्य कब रावण राज्य कब होता है यह कुछ भी पता नहीं है।

जैसे मेंढकों मिसल ट्रां–ट्रां करते रहते हैं। मेंढकों की बड़ी सभा होती है ना। वण्डर है ना। खुशी में जैसे .... खाते हैं। मनुष्यों की अवस्था भी मेंढकों मिसल है। अर्थ कुछ नहीं समझते। देखने में भल मनुष्य आते हैं; परन्तु जब तक मेंढक पना, जंगलीपना न दिखावें तब तक सुख न आए। जैसे मेंढक बकते रहते हैं यह एक जैसे टेव पड़ गई है। कितनी पंचायती है। फलानी सभा, फलानी सभा। कहां से 10 कहां से 20 जास्ती मिल तो एक को छोड़ उनके पास चले जावेंगे। कितनी कचड़ पट्टी है। भक्ति मार्ग में गाया जाता है पत्थर बुद्धि। तुम अभी पारस बुद्धि बन रहे हो। बाकी सभी हैं पत्थर बुद्धि। फिर उस(में) कोई 2% कोई 5% हैं। बाप ने समझाया है यह राजधानी स्थापन हो रही है। 2... वाले पिछाड़ी में आकर कुछ न कुछ खाकर खुखर बनेंगे। अभी ऊपर से भी खाकर खुखर बच्चे आते रहते हैं। सरकस में कितने अच्छे–2 एक्टर्स होते हैं। फिर कोई हल्के–सल्के एक्टर्स भी होते हैं। यह है बेहद की बात। बच्चों को कितना अच्छी रीत समझाया जाता है। यहां तुम बच्चे आते ही हो रिफ्रेश होने। हवा खाने लिए नहीं आते हो। कई तो और ही उपान्दी (हंगामा) मचाते आते हैं। कुछ भी जानते ही नहीं। कैसे याद करें, किसको याद करें। ब्राह्मण तो है नहीं। पत्थर बुद्धि को ले आते हैं। तो वह दुनियांवी वाय(ब्रे)शन रहती है। यहां तो बाप ज़ोर से पकड़ कर खड़ा रहते हैं। बाहर में तुमको कौन पकड़े। बाप तो यहां बैठे हैं। श्रीमत द्वारा तुम माया पर जीत पाते हो। माया घड़ी–2 तुम्हारी बुद्धि को भगा देती है। यहां तो बाप कशिश करते हैं। ख(ीं)चते हैं। बाप कब भी (कोई) उल्टी बात नहीं करेंगे। बाप तो सत्य है ना। तुम यहां सत के संग में बैठे हो। दूसरे सभी असतसंग हैं। उनको सतसंग कहना ही बड़ी भारी भूल है। तुम जानते हो सत्य एक ही बाप है। शंकराचार्य भी एक सत की पूजा करते हैं। उनको यह पता नहीं कि हम किसकी पूजा करते हैं। फिर उनको क्या कहेंगे। कितनी अंधश्रद्धा है। लाखों मनुष्य उनके पीछे जाते हैं। जैसे खोजों का गुरु आगा खां है अभी वह क्या करते हैं, कितने उनके फॉलोवर्स हैं। उन्हों को हर महीने देना होता है वह अलग। और फिर जब यहां आते हैं तो बहुत भेंट उनको मिलती है। हीरों में वज़न करते हैं। नहीं तो हीरों में वज़न कब किया नहीं जाता। सतयुग में हीरे जवाहर तो तुम्हारे लिए जैसे पत्थर–भित्तर हैं, जो मकानों में लगाते हैं। यहां कोई थोड़े ही होगा जिसको हीरों का दान मिले। कितने पैसे हैं। पापात्मा पापात्माओं को ही देते हैं। उनसे पाप करते हैं तो देने वाले पर भी चढ़ता है। अजामिल जैसे पापी बन जाते हैं। बहुत गंद करते हैं। दूसरे धर्म वाले का जाकर बनते हैं। उनको बेसमझ कहेंगे ना। यह भगवान बैठ समझाते हैं न कि मनुष्य; इसलिए बाबा (ने) कहा था तुम्हारे जो चित्र हैं उन पर हमेशा लिखा हुआ हो भगवानुवाच। बाबा तो एक बार कहेंगे ऐसे करो। दस बार तो नहीं कहेंगे। हमेशा लिखो त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। सिर्फ़ शिव भगवान से भी मनुष्य मूँझेंगे। भगवान तो है निराकार; इसलिए त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति के चित्र भी हैं सिर्फ़ उसमें शिवबाबा नहीं हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों का नाम कहा जाता है। ब्रह्मा देवताएं नमः। अभी सतयुग में तो ब्रह्मा देवता कब नाम सुना है क्या? ब्रह्मा देवताए नमः फिर उनको गुरू भी कहते शिव शंकर कह देते। अभी शंकर बापू कैसे ज्ञान देंगे। किसके भी बुद्धि में नहीं आता कि वह बापू फिर यहां कहां से आया। शंकर बापू और भाभी पार्वती। ताई कहो चाची कहो। एक तो कहते हैं शंकर बापू फिदा हुआ। उनके वीर्य से बिच्छू–टिण्डन पैदा हुए। अभी ऐसा है शंकर बापू। वह फिर ज्ञान कहां से लावेगा। कैसे–2 बातें तुम सुनते आये हो। सच्ची अमर कथा यह है। बाप कहते हैं तुम सभी पार्वतियाँ हो। बाप तुम सभी को आत्मा समझ बच्चे को ज्ञान देते हैं। भक्ति करते हैं; इसलिए सीताएँ कहा जाता है। भक्ति का फल भगवान देते हैं। कहते हैं मैं राम हूँ। यहां तो तुम बच्चों को समझाया जाता है, एक शिवबाबा है। ईश्वर, भगवान आदि भी नहीं शिवबाबा अक्षर बहुत ही मीठा है। बाप खुद कहते हैं मीठे–2 बच्चों। तो बाबा हुआ ना। बाप समझाते है। आत्मा में ही सभी संस्कार भरी जाती है। आत्मा निर्लेप नहीं। निर्लेप होती तो पतित क्यों बनती। ज़रूर लेप–छेप लगता है।

तब तो पतित बनती है। कहते भी हैं भ्रष्टाचारी। वह है श्रेष्ठाचारी। फ़र्क है ना। जो श्रेष्ठाचारी हैं उन्हों की ही महिमा गाते हैं, आप ऐसे–2 हो। हम नीच पापी हैं; इसलिए अपन को देवता कह नहीं सकते। अभी बाप बैठ मनुष्य को देवता बनाते हैं। महिमा तो है ना। नानक के ग्रंथ में भी महिमा है। सिक्ख लो(ग) खुद मानते हैं सद्गुरू अकाल। जो अकाल मूर्त है वही सच्चा सद्गुरू है। तो उस एक को भी ही मानना चाहिए ना। कहते एक हैं, करते फिर दूसरे हैं। बहुत ज़ोर से कहते हैं सद्गुरू अकाल। अर्थ कुछ भी नहीं जानते। अभी बाप जो सद्गुरू अकाल है वह बैठ समझाते हैं, तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो सम(झ)ते हैं। सम्मुख बैठे तो भी कुछ सुनते हैं। कई तो .... यहां से बाहर निकले और फिर खलास। यहां ही बह जाता है। बाबा मना करते हैं, कब भी संसारी बातें झरमुई–झंगमुई की मत करो। मत सुनो। कोई तो बहुत खुशी से ऐसी बातें सुनते और सुनाते हैं। बाप की माहवाक्य भूल जाते हैं। वास्तव में जो अच्छे बच्चे हैं, सर्विस की ड्यूटी तो बजानी ही है। ड्यूटी पूरी हुई फिर अपने मस्ती में। धंध(धे) आदि में कहां झूठ आदि बोलते हैं–पाप होते हैं वह तो कुछ भी नहीं है। कड़े तो कड़ा पाप है काम कटारी का। उन पर जीत पानी है। बाकी झूठ आदि बोलना व्यापारी लोग तो धंधे (में) झूठ आदि बोलते ही हैं। फिर ईश्वर अर्थ दो पैसे, तीन पैसे, एक आना भी निकालते हैं। समझते हैं पाप भी किये हैं ईश्वर अर्थ कर देते हैं तो पाप मिट जाएं। ऑफिसर लोग ऐसे नहीं निकाल सकते। शिवबाबा कहते हैं मैं भी बड़ा व्यापारी हूँ। तुम भी व्यापारी हो। सरकारी नौकरी वाले मेरे अर्थ नहीं निकालते ..... बाप ने समझाया है कृष्ण और क्रिश्चियन का बड़ा अच्छा सम्बन्ध है। कृष्ण की राजाई होती है ना। ल.ना. बाद में नाम पड़ता है। वैकुण्ठ कहने से ही झट कृष्ण याद आवेगा। वैकृण्ठ स्वर्ग़ याद आने से कृष्ण ही बुद्धि में आता है। ल.ना. भी याद नहीं आते; क्योंकि कृष्ण तो छोटा बच्चा है ना। छोटे बच्चे पवित्र होते हैं। तुमने यह भी सा. किया है, कैसे बच्चे जन्म लेते हैं। नर्स आगे खड़ी रहती है। झठ उठाया और सम्भाला। कृष्ण के लिए कितनी बातें लिख दी हैं। मटकियां फोड़ना यह करना यह सभी किसका काम है? बाप ने कहा है हरेक बात युक्तियों से होती है। हाँ, बाबा की जादूगिरी थी। उसमें इतने सारे पैसे ...। बच्चों को बहलाने लिए यह सभी होते थे। कब्रस्तान बनाते थे। यह सभी पार्ट था सो बंद हो गया। बचपन, युवा, वृद्ध का पार्ट अलग–2 बजता है ना। जो हुआ ड्रामा। उनमें कुछ भी संकल्प नहीं चलता। यह तो ड्रामा बना हुआ है ना। हमारा पार्ट बज रहा है ड्रामा के प्लैन अनुसार। माया की भी प्रवेशता होती है और बाप की (भी) प्रवेशता होती है। कोई बाप के मत पर चलते हैं, कोई रावण के मत पर। रावण क्या चीज़ है कब देखा है क्या? सिर्फ़ चित्र देखते हो। शिवबाबा का तो फिर रूप है। रावण का क्या रूप है। 5 विकार भूत आकर प्रवेश करते हैं तो रावण कह जाता है। यह है भूतों की दुनियां, असुरों की दुनियां। तुम बच्चे समझते हो हमारी आत्मा अभी सुधरती जाती है। यहां तो शरीर भी आसुरी है आत्मा सुधरती–2 पावन बन जावेगी तो फिर यह खल उतार देंगे। फिर सतोप्रधान खल मिल जावेगी कंचन काया मिलेगी। सो तब जब आत्मा भी कंचन हो। सोना कंचन हो तो ज़ेवर भी कंचन बनेंगे। सोने में खाद भी डालते हैं ना। अभी तुम बच्चों की रचयिता और रचना की नॉलेज बुद्धि में चक्र लगाती रहती है। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। कहते हैं ऋषि–मुनि भी नेती–2 कहते गए। हम कहते हैं ल.ना. से पूछो तो ये भी नेती–2 कहेंगे; परन्तु इनसे पूछा नहीं जाता। कौन पूछेंगे। पूछा जाता है गुरू लोग से। यह गाया जाता है ऋषि–मुनि रचयिता और रचना की आदि, मध्य, अंत को नहीं जानते थे। गोया (सिद्ध) करते हैं हम नास्तिक लोग हैं। फिर तुम उनकी महिमा क्यों करते हो। उनके आगे माथा क्यों टेकते हो। अभी तुम पूछ सकते हो तुम समझाने लिए कितना माथा मारते हो। गला ही ख़राब हो जाता है। बाबा भी गला ख़राब करेंगे क्या। बाप तो बच्चों को सुनावेंगे। जिन्होंने समझा है। बाकी और के साथ फालतू थोड़े ही माथा लगावेंगे। अच्छा मीठे–2 (रू)हानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडमॉर्निंग।